आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस नहीं ले सकता इंसानों की जगह, यह बस हमारे कामों को आसान करेगा

आईआईएम रायपुर के डिजिटल इकोनॉमी सेंटर का स्पेशल वर्कशॉप, डिजिटल मार्केटिंग पर हुई चर्चा

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जिसे हम शार्ट में एआई कहते हैं, वो कभी इंसानों की जगह नहीं ले सकता। यह केवल इंसानों के काम को आसान बनाने में मदद करता है।

रायपुर। एआई क्रांति नए और उभरते अवसरों जैसे कि स्मार्ट सिटी एप्लिकेशन्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, सोशल मीडिया, मोबाइल ऐप, जैसे अन्य स्त्रोतों को लेकर आई है। ये हमारे कामों को आसान बनाने में काफी मदद करते हैं और डिजिटल अर्थवयवस्था में भी काफी बड़ा योगदान दे रहे हैं। ये विचार हैं डिजिटल मार्केटिंग एक्सपर्ट्स के। आईआईएम रायपुर द्वारा शहर के एक निजी होटल में डिजिटल अर्थवयवस्था पर दो दिवसीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसके पहले दिन एआई सहित अन्य विषयों के रिसर्चर और स्कॉलर ने अपने शोधपत्रों को देशभर से आये एक्सपर्ट के सामने पढ़कर सुनाया और डिजिटल इकॉनमी से अभी और भविष्य में क्या फर्क पड़ेगा इस पर चर्चा की गई।

कैशलेस लेनदेन अभी भी दूर का सपना

प्रो. प्रदीप कुमार, आईआईएम लखनऊ और प्रो. रश्मि शुक्ला ने कैशलेस अर्थव्यवस्था और माइक्रोफाइनेंस पर प्रस्तुत पत्रों में अपना मार्गदर्शन दिया। पेपर्स के जरिए नए विचारों जैसे कि कैशलेस लेनदेन अभी भी ग्रामीण भारत के लिए कितना दूर का सपना है, ई-वॉलेट का प्रयोग भारतीयों की जिंदगी किस प्रकार से आसान बना रहा है, भारतीय अर्थव्यवस्था पर 2016 के विमुद्रीकरण का प्रभाव और बैंकिंग में संभावनाओं सहित कई विषयों पर चर्चा की गई। इसमें कई विशेषज्ञों का कहना रहा कि गांवों में कैशलेस सिस्टम अभी भी दूर का सपना है।

सोशल मीडिया पर भी चर्चा

आईआईएम रायपुर के डायरेक्टर प्रो. भारत भास्कर, प्रो सुमीत गुप्ता, नोवा साउथइस्टर्न यूनिवर्सिटी के प्रो. सौरेन तथा नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ स्मार्ट गवर्नेंस के संजय बोबड़े शामिल रहे। इनके अलावा देशभर के विभिन्न क्षेत्रों से रिसर्च स्कॉलर शामिल हुए। शुक्रवार को डिजिटल मार्केटिंग एंड सोशल मीडिया, डिजिटल इकोनॉमी, ई-कॉमर्स एंड एम-कॉमर्स व रोबोटिक जैसे विषयों पर भी चर्चा की गई। देशभर से आए शोधकर्ताओं ने अपने पेपर भी पेश किए।

Haribhoomi, 9th Feb 2019, P.12